श्राद्धविधिका अध्यात्मशास्त्रीय आधार

भूमिका

हिन्दू धर्ममें उल्लेखित ईश्वरप्राप्तिके मूलभूत सिद्धांतोंमेंसे एक है 'देवऋण, ऋषिऋण, पितृऋण एवं समाजऋण, इन चार ऋणोंको चुकाना' । इनमेंसे पितृऋण चुकानेके लिए 'श्राद्ध' आवश्यक है । माता-पिता तथा अन्य निकट संबंधियोंकी मृत्युपरांतकी यात्रा सुखमय एवं क्लेशरहित हो तथा उन्हें सद्गति मिले, इस हेतु किया जानेवाला संस्कार है 'श्राद्ध' । श्राद्धविधिमें किए जानेवाले मंत्रोच्चारणमें पितरोंको गति देनेकी सूक्ष्म शक्ति समाई हुई होती है । श्राद्धमें पितरोंको हविर्भाग अर्पण करनेसे वे संतुष्ट होते हैं । इसके विपरीत श्राद्ध न करने पर पितरोंकी इच्छाएं अतृप्त रहती हैं । ऐसे वासनायुक्त पितर अनिष्ट शक्तियोंद्वारा त्रस्त होनेपर उनके दास बन जाते हैं । ऐसेमें अनिष्ट शक्तियोंद्वारा पितरोंके माध्यमसे परिजनोंको कष्ट देनेकी संभावना अधिक होती है । श्राद्धविधि करनेसे पितरोंकी ऐसे कष्टसे मुक्ति हो जाती है और हमारा जीवन भी सुसह्य हो जाता है ।

श्राद्धविधिका इतना महत्त्व होते हुए भी आज हिंदुओंमें धर्मशिक्षाके अभाववश, अध्यात्मपर उनके अविश्वास, पश्चिमी संस्कृतिके अंधानुकरणसे उनकी विचारधारापर आए आवरण आदिके कारण श्राद्ध-विधि उपेक्षित अथवा आडंबरयुक्त कर्मकांड समझी जाने लगी है । अतः अन्य संस्कारोंके समान ही 'श्राद्ध' संस्कार कितना अनिवार्य है, यह बताना आवश्यक हो गया है ।

श्राद्धका महत्त्व, लाभ, प्रकार, श्राद्धसंबंधी विधिनिषेध आदि जैसा मूलभूत ज्ञान 'श्राद्ध (भाग १) महत्त्व एवं अध्यात्मशास्त्रीय विवेचन' ग्रंथमें दिया है । प्रस्तुत ग्रंथकी विशेषता है, इसमें श्राद्धके विविध कृत्योंके मूलभूत तथा बुद्धिसे परेके अध्यात्मशास्त्रीय कारणोंका विवेचन किया गया है । फलस्वरूप श्राद्धसंबंधी सत्यता मान्य होनेके साथ-साथ आशंकाएं भी दूर होनेमें

सहायता मिलेगी । श्राद्धमें रंगोलीके चूर्णसे रंगोली क्यों न बनाएं ?, श्राद्धके समय यज्ञोपवीत दाहिने कंधेपर (अपसव्य) क्यों रखें ?, देवता एवं पितरोंको नैवेद्य दिखानेकी पद्धतियोंके पीछे क्या शास्त्र है, ऐसे अनेक प्रश्नोंके उत्तर इस ग्रंथमें देनेके साथ ही, श्राद्ध करनेपर पितरोंको सद्गति प्राप्त हुई अथवा नहीं, यह जाननेके लक्षण एवं अनुभूतियोंको भी इसमें सम्मिलित किया गया है ।

सनातन संस्थाके साधकोंको ईश्वरकी कृपासे उच्च स्तरका ज्ञान प्राप्त होता है । इस कारण सामान्यजनोंको इसका आकलन होनेमें थोडी कठिनाई हो सकती है, किंतु जिज्ञासा एवं उत्कंठा, इस ज्ञानके आकलनमें सहायक होंगे ।

इस ग्रंथके अध्ययनसे हमारे महान ऋषि-मुनियोंद्वारा दी गई 'श्राद्ध'रूपी अनमोल संस्कृति-संपदाकी धरोहरको संजोनकी सद्बुद्धि सभीको प्राप्त हो तथा श्रद्धापूर्वक श्राद्ध-विधि कर, स्वयंके पूर्वजोंकी तथा स्वयंकी भी उन्नति साध्य कर सकें, यही श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है । - **संकलनकर्ता**

टिप्पणी - 'धार्मिक कृत्योंका अध्यात्मशास्त्रीय आधार बतानेवाली ग्रंथमाला' की संयुक्त भूमिका 'पूजासामग्रीका महत्त्व' ग्रंथमें दी है ।

सनातनकी देवतासंबंधी ग्रंथसंपदा

卐 शिव 卐 श्रीराम 卐 श्रीकृष्ण 卐 श्री गणपति

卐 शक्ति 卐 हनुमान 卐 श्रीविष्णु 卐 श्री सरस्वती

卐 देवताओंकी विशेषताएं एवं कार्य क्या हैं ?

卐 देवताओंकी उपासना क्यों एवं कैसे करें ?

... इत्यादिके विषयमें शास्त्रीय जानकारी पाकर, देवताओंके प्रति भक्तिभाव बढाएं ! पृथ्वीपर कहीं भी न उपलब्ध, ऐसा ज्ञान अब सनातनके ग्रंथोंमें !

भावपूर्ण श्राद्धकर्ममें सहायक सनातनके सात्त्विक उत्पाद

卐 **देवताओंकी नामजप-पट्टियां** 卐 **सनातन अगरबत्ती**

अनुक्रमणिका

(कुछ वैशिष्ट्यपूर्ण विषय '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।)

१. श्राद्ध करनेके संदर्भमें कृत्य **२३**

* श्राद्धकर्ता एवं श्राद्धभोक्ताके लिए विधिनिषेध २३
* श्राद्धका भोजन करनेवाला स्वाध्याय, कलह आदि कृत्य क्यों न करें ? २३
* श्राद्धमें रंगोलीके चूर्णसे रंगोली क्यों न बनाएं ? २५
* श्राद्धमें 'ॐ'का उच्चारण क्यों न करें ? २६
* श्राद्धसंकल्पसे पूर्व द्वारलोपका विचार करनेकी आवश्यकता २७
* पिताके जीवित रहनेपर श्राद्धादि विधियोंमें सिर मुंडवानेकी आवश्यकता न होना २८
* सर्वसामान्यतः श्राद्धप्रयोग कैसे होता है ? २९

२. श्राद्धकर्मके कृत्योंका अध्यात्मशास्त्रीय आधार **३२**

* श्राद्धके समय यज्ञोपवीत दाहिने कंधेपर (अपसव्य) क्यों रखें ? ३२
* देवतापूजनके कृत्य दक्षिणावर्त (घडीकी सुइयोंकी) दिशामें तथा वही कृत्य श्राद्धमें विपरीत दिशामें क्यों करें ? ३४
* श्राद्धके समय ब्राह्मण देवस्थानके पूर्वाभिमुख एवं पितृस्थानके उत्तराभिमुख बैठनेका अध्यात्मशास्त्रीय आधार क्या है ? ३५
* श्राद्धमें ब्राह्मणोंको दिए जानेवाले दानोंमें यज्ञोपवीतका दान न देनेसे श्राद्ध निष्फल क्यों हो जाता है ? ५८
* श्राद्धसंपात हो, तो श्राद्ध कैसे करें ? ५९
* अविधवा नवमीपर श्राद्ध करनेकी पद्धति ६०
* मातामहश्राद्ध (पुत्रद्वारा नानाजीका श्राद्ध) ६०

* जिनका अंत्यसंस्कार उचित पद्धतिसे न हुआ हो, क्या उनके लिए श्राद्ध किया जा सकता है ? ६१
* संन्यासीका श्राद्ध कैसे करें ? ६१
* यतीका श्राद्ध कैसे करें ? ६१
* मनःपूर्वक श्राद्धविधि करनेका महत्त्व ६२

३. श्राद्ध करनेसे पितरोंको सद्गति प्राप्त हुई, यह जाननेके संदर्भमें लक्षण और अनुभूतियां ६६

४. शास्त्रोंके अनुसार श्राद्धकर्म न करनेसे होनेवाली हानि ६८

५. श्राद्ध करनेमें अडचन हो, तो उसे दूर करनेका मार्ग ७०

६. श्राद्धकी सीमा (मर्यादा) ७२

७. सर्वसामान्य व्यक्तिका श्राद्ध, शक्ति-उपासकोंकी आराधना विधि, संतोंका जन्मोत्सव एवं संतोंकी पुण्यतिथि ७३

८. पूर्वजोंको सद्गति मिलने एवं अतृप्त पूर्वजोंकी पीडासे रक्षा हेतु श्राद्धविधियोंके समान ही दत्तात्रेय देवताके नामजपका महत्त्व ७४

* पूर्वज अधिक मात्रामें अनिष्ट शक्तियोंके रूपमें भोग भोगते हों, तो श्राद्धके भोजनोपरांत उलटियां, रेचन इत्यादि कष्ट होना और उसपर उपायस्वरूप दत्तात्रेय देवताका नामजप ७४

दत्तके नामजपकी उचित पद्धति एवं उपासनाका शास्त्र ध्वनिचक्रिका (ऑडियो सीडी)

पूर्वजोंको सद्गति मिलनेके लिए श्राद्धविधिके साथ भगवान दत्तात्रेय का नामजप करना भी महत्त्वपूर्ण होता है । नामजपका उच्चारण अध्यात्मशास्त्रकी दृष्टिसे उचित ढंगसे करनेसे देवताके तत्त्वका अधिक लाभ होता है । दत्तका नामजप कैसे करना है, यह इस ध्वनिचक्रिकासे समझ लें !